वर्ष २९ अंक-२३ सोमवार, २६ जनवरी २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये मुंबई, इंदौर से एक साथ प्रकाशित

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

पिट्स

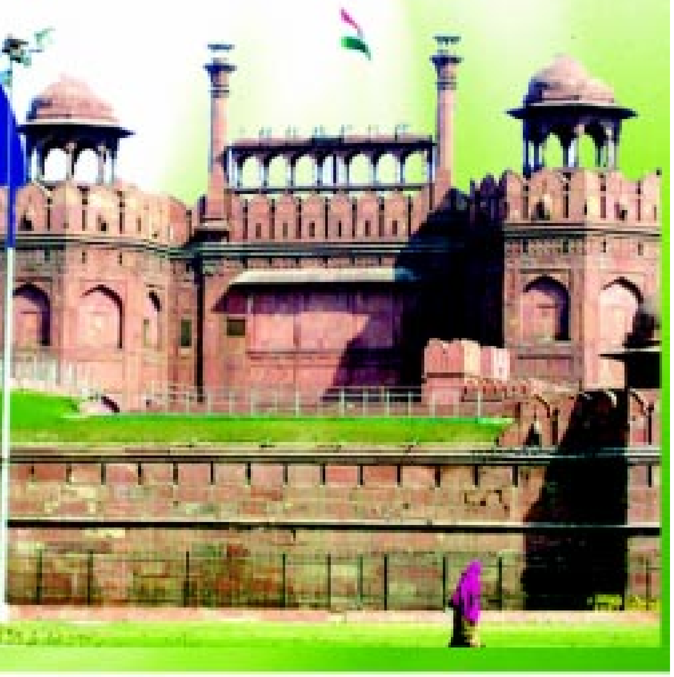

२६ जनवरी २००९

श्वेत घर में अश्वेत ओबामा

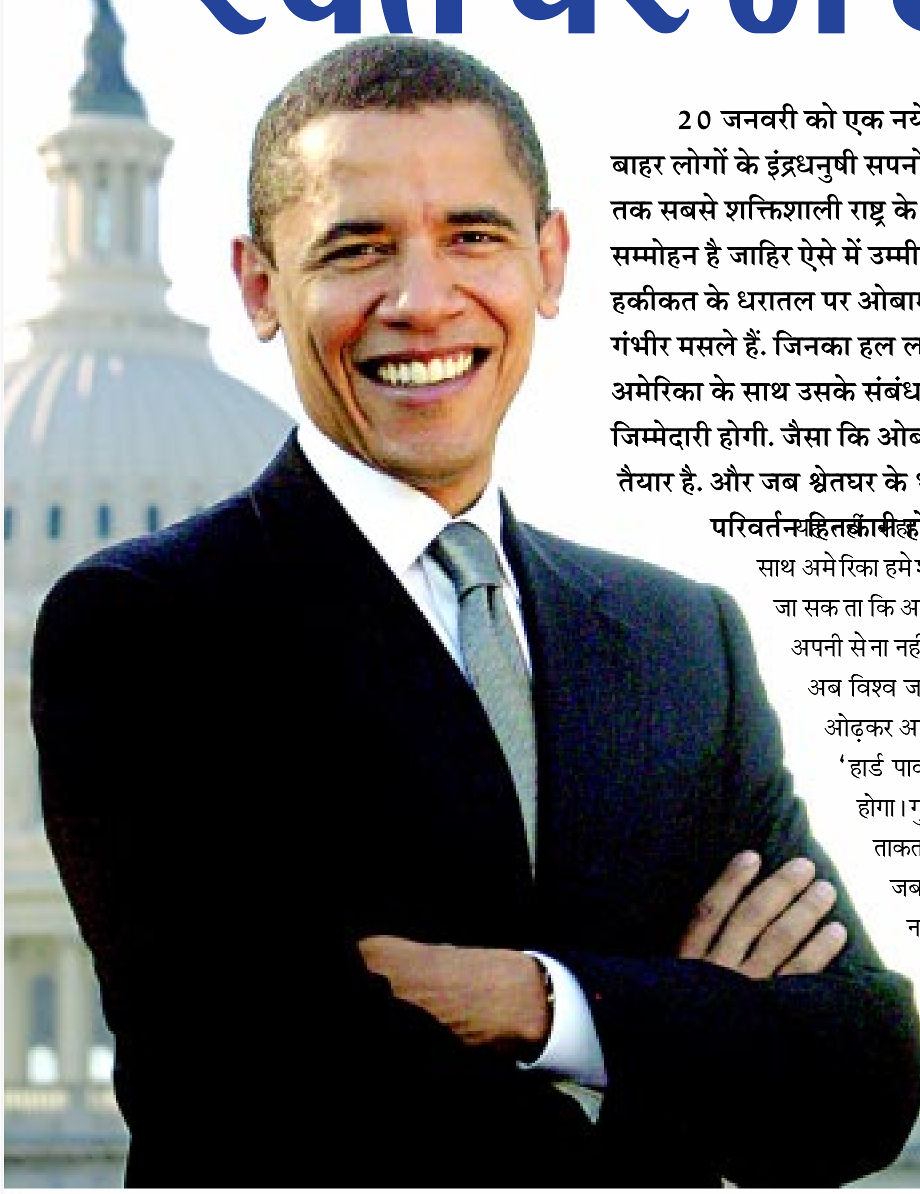

20 जनवरी को एक नये इतिहास का आगाज करने वाले बराक हुसैन ओबामा ने न सिर्फ अमेरिका के अंदर और बाहर लोगों के इंद्रधनुषी सपनों में रंग भरने की उम्मीद जगाई है, बल्कि चुनाव में खड़े होने से लेकर जीत का बिगुल फूंकने तक सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के पहले अश्वेत राष्ट्रपति ने यह भी प्रमाणित किया है कि उनके व्यक्तित्व में एक इन्द्रजालीय सम्मोहन है जाहिर ऐसे में उम्मीदें सातवें आसमान पर होती है और इस तरह चुनौतियां अचानक काफी बढ़ जाती है. फिर हकीकत के धरातल पर ओबामा को जो गद्दी मिल रही है, उसमें आर्थिक चुनौतियों के साथ-साथ वैश्विक आतंकवाद जैसे गंभीर मसले हैं. जिनका हल लम्बे समय का इंतजार नहीं कर सकता है. जहां तक भारत का प्रश्न है तो पिछले कुछ वर्षों में अमेरिका के साथ उसके संबंध को जो ऊंचाई मिली है उसे ठोस विश्वास के साथ नई बुलंदी तक पहुंचाना भी ओबामा की जिम्मेदारी होगी. जैसा कि ओबामा ने कहा है कि अमेरिकी जनता परिवर्तन चाहती है और वह परिवर्तन की पहल करने को तैयार है. और जब श्वेतघर के भीतर अश्वेत ओबामा पहुंचे हैं तो उम्मीद की जाना चाहिए कि दुनियाभर के लिये यह परिवर्तन हितकारी होगा।

यह नहीं कहा जा सकता कि ओबामा की ताजपोश के साथ अमेरिका हमेशा के लिए बदल चुका है। यह भी नहीं माना जा सकता कि अब अमेरिका इराक या अफगानिस्तान में कभी अपनी सेना नहीं भेजेगा। लेकिन यह जरूर है कि अमेरिका अब विश्व जनमत की आड़ में और नैतिकता का लबादा ओढ़कर अपनी ताकत के इस्तेमाल की कोशिश करेगा। 'हार्ड पावर' की जगह 'सॉफ्ट पावर' उसका हथियार होगा। गुरुफुकुयामा पहले ही कह चुके हैं, 'अमेरिकी ताकत सबसे कारगर और फायदेमंद तब होती है, जब इसका प्रयोग परदे के पीछे से हो।' यह भी नहीं भूलना चाहिए कि ओबामा बुश नहीं हैं और अब नियोकॉन्स भी नहीं हैं, जो उन्हें दिशा-निर्देश दें। लेकिन ओबामा अमेरिकी हैं, यह सचाई है। पूर्व विदेश मंत्री मैडलिन अलब्राइट की तरह हर अमेरिकी इस बात का कायल है कि दुनिया की अगुवाई करना अमेरिका का हक है, क्योंकि अमेरिकी बाकी लोगों से ज्यादा आगे की सोच सकते हैं। और यह सोच ओबामा को हमेशा ही प्रेरणा देती रहेगी।

फ्रांसीसी लेखक पीयरे हैसनर के मुताबिक, अमेरिकी संविधान में संस्थाओं के बीच संतुलन को अहमियत दी गई है, क्योंकि उसके निर्माताओं का मानना था कि सत्ता भ्रष्ट करती है। भले ही सत्ता चलाने वालों की नीयत कितनी भी साफ और ईमानदार क्यों न हो, इसलिए किसी भी एक संस्था को बेशुमार ताकत की इजाजत नहीं दी जा सकती। इसी कसौटी पर हैसनर ने सवाल उठाया कि जब अमेरिका को अपनी जमीन पर सत्ता का केंद्रीकरण पसंद नहीं है, तो फिर यही सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय राजनीति में क्यों नहीं लागू होना चाहिए? इसलिए क्या अब अमेरिका अफगानिस्तान और इराक जैसे देशों में सत्ता परिवर्तन की हिमाकत नहीं करेगा? बराक ओबामा के शब्द इसी ओर इशारा करते हैं। और हमें यह भी यकीन दिलाते हैं कि अमेरिका अपनी गलतियों से सबक लेगा। मेरा यह विश्वास तब और मजबूत हुआ, जब ओबामा ने मुसलिम देशों से मुखातिब हुए और कहा, 'मैं परस्पर सम्मान और आपसी हितों के मद्देनजर नया रास्ता तलाशना चाहता हूं।'

गण करें तंत्रों का निर्माण

उत्तम झंवर

गणतंत्र पर मैं आव्हान करूंगा कि गण को मिलकर तंत्र को सशक्त करने की कवायद करनी चाहिए। चुनावी माहौल इस बार 26 जनवरी पर छाया रहेगा। नए कुकुरमुत्तों की जमात जहां शपथ लेकर विधानसभा में मौजूद है वही अब लोकसभा के चुनावों की सरगर्मी सिर चढ़कर बोल रही है। अपनी लकीर बड़ी खींचने के बजाय ज्यादातर सफेदपोश दूसरे की लकीर छोटी करने में लगे है। इन सबसे परे आप सभी ने गौर किया होगा कि राष्ट्रपति ओबामा के भाषण का हिन्दी अनुवाद भी है। ये सही है कि ओबामा हिन्दुत्व की भावना के साथ यहां के लोगों की मनोदशा समझने का प्रयास कर रहे है। इन सबसे परे यह भी खास बात है कि वैश्विक मंदी के दौर में भारत ऐसा देश साबित हुआ जिस पर मंदी का प्रभाव सीमित है। मल्टीनेशनल कंपनियों का बाजार अब भारत जैसे देश ही तो है। यहां के गांव-कस्बे सभी अब ग्लोब पर दिखने लगे है। ऐसे में हम लोगों को चाहिए कि अपनी ताकत को पहचान कर हम खुद को भीड़ से अलग साबित करने की कवायद करें। केवल नेताओं के भरोसे चलने के बजाय अपने विवेक से चलेंगे तो शायद हम देश के विकास के लिए अपना योगदान दे सकेंगे।

संविधान की सूक्तियों को समझने भर का प्रयास करें तो विजयपथ स्वतः ही तैयार होने लगेगा। अर्बन-रूरल या अमीर-गरीब के फर्क के बजाय एक बात करें। भारतीयता की। देश को एकसूत्र में जोड़ कर विरोधी देशों को नेस्तोनाबूद करके मानचित्र पर अपनी अटल छाप छोड़ी जा सकती है। देश के युवाओं को मशाल अपने हाथ में लेकर नई सुबह का शंखनाद करना होगा। युवा बदलाव के पट पर आसानी से दस्तक दे सकते हैं। रहमान ने जय हो के गोल्डन ग्लोब से इसकी शुरूआत कर दी। हम ऑस्कर पर भी छा सकते हैं। जरूरत बस एक सही कदम बढ़ाने की है। गण के लिए तंत्रों को बनाने की है।